तुलसीदास एक पुनर्मूल्यांकन

संपादक:
डॉ. अजय तिवारी

तुलसीदास एक पुनर्मूल्यांकन

संपादक:

डॉ. अजय तिवारी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितंबर, 2022

© डॉ. अजय तिवारी

'तुलसी बाबा, भाषा मैंने तुमसे सीखी।'

श्री त्रिलोचन शास्त्री के लिए

अनुक्रम

भूमिका 8

प्राचीन काल में भक्ति का स्वरूप : ऐतिहासिक परिदृश्य 23

सुवीरा जायसवाल

मध्यकालीन साहित्य को पढ़ने की एक दृष्टि 36

नित्यानंद तिवारी

भक्ति आंदोलन और तुलसीदास 58

रामविलास शर्मा

राम कथा : ऐतिहासिक-सामाजिक संदर्भ 70

मुहम्मद अयूब खान

तुलसीदास : जीवनवृत्त और कृतियां 84

माताप्रसाद गुप्त

मृत्युंजय कवि तुलसीदास 101

नागार्जुन

तुलसीदास 106

जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन

तुलसी के काव्य में विनायक तत्त्व 122

हजारीप्रसाद द्विवेदी

तुलसी का समाज और ज्ञान 145

अजय तिवारी

तुलसी की भक्ति 176

रामविलास शर्मा

तुलसी की भावुकता 209

रामचन्द्र शुक्ल

तुलसी की वैचारिकता 258

वारान्निकोव

तुलसी की कविताई 299

विश्वनाथ त्रिपाठी

तुलसी-साहित्य के आपेक्षिक मूल्य 400

मोहन राकेश

विदेशी चिन्तकों की दृष्टि में तुलसी 424

शिवनारायण खन्ना

रामकथा और आज का पाठक 444

स.ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय'

तुलसी-काव्य की आधुनिक संदर्भवत्ता 470

शिवकुमार मिश्र

तुलसीकृत रामायण का आदर्श 498

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

'रामचरितमानस' का भक्ति-दर्शन 510

उदयभानु सिंह

'कवितावली' में वर्ण और वर्ग का विवेक 529

रमेश कुंतल मेघ

तुलसी-साहित्य की प्रासंगिकता 1

अजय तिवारी

भूमिका

हिंदी के सबसे विवादास्पद कवि तुलसीदास हैं। हिंदी के सबसे लोकप्रिय कवि भी तुलसीदास हैं। तुलसी-साहित्य में विकट अंतर्विरोध हैं। वैसे ही अंतर्विरोध तुलसी संबंधी धारणाओं में भी हैं।

आधुनिक संसार में भारत की सांस्कृतिक पहचान सबसे अधिक जिन साहित्यकारों के माध्यम से बनी, वे हैं तुलसीदास, रवींद्रनाथ टैगोर और प्रेमचंद। उन्नीसवीं सदी के अंग्रेज लेखक अर्नेस्ट वुड ने अपनी पुस्तक 'इंगलिश मैन डिफेंड्स मदर इंडिया' में विचार प्रकट किया है कि 'तुलना करने पर यह ग्रंथ (रामचरित मानस) लैटिन और यूनानी भाषा के सर्वमान्य ग्रंथों से भी श्रेष्ठ ठहरता है।' यदि हम यह ध्यान रखें कि लैटिन ईसाइयों की धर्मभाषा है पुरानी बाइबिल लैटिन में ही है और पुनर्जागरण काल में यूरोप ने अपने गर्व और सम्मान का स्रोत यूनान की संस्कृति को बनाया था, तब अर्नेस्ट वुड के साहस और विवेक का ठीक-ठीक अंदाज लग सकेगा। 'मानस' का पहला अंग्रेजी अनुवाद अमरीकी पादरी फादर एटकिंस ने किया और पहला रूसी अनुवाद कम्युनिस्ट बुद्धिजीवी वारान्निकोव ने। 'मानस' में अवश्य ऐसे विचार होने चाहिए कि एक धार्मिक ईसाई और एक नास्तिक क्रांतिकारी दोनों मुक्त भाव से उसे स्वीकार करें। वुड, एटकिंस, वारान्निकोव के अलावा जॉर्ज ग्रियर्सन और तेस्सितोरि

जैसे विद्वानों ने भी तुलसी का महत्त्व पहचाना है। तुलसी-साहित्य हमारी उदार अंतर्राष्ट्रीय छवि का माध्यम है।

तुलसी ने जिस रामकथा को आधार बनाया, उसका देश-कालगत प्रसार आश्चर्यजनक है। संस्कृत में वाल्मीकि, भवभूति, कालिदास, हिंदी में तुलसी, मैथिलीशरण गुप्त, निराला, नरेश मेहता और कैफी आज़मी, रामकथा के माध्यम से हम अपनी सुदीर्घ सांस्कृतिक निरंतरता का बोध प्राप्त कर सकते हैं। संस्कृत और हिंदी के अलावा, भक्तिकाल में, तमिल के कंबन, मराठी के एकनाथ, बांग्ला के कृत्तिवास, तुलसी के साथ-साथ लोकजागरण-कालीन भारत की सांस्कृतिक एकता के निर्माता हैं। मलेशिया और इंडोनेशिया में तथा प्रवासी भारतीय आबादी के साथ फिजी और गुयाना जैसे अफ्रीकी देशों में भी रामकथा का प्रसार हुआ है।

यह उल्लेखनीय है कि इन प्रवासी भारतीयों में बहुत बड़ी संख्या इस्लाम के अनुयाइयों की है। इसलिए रामकथा का सांप्रदायिक भावनाओं से सहज-संबंध नहीं है। रामकथा के गायक तुलसीदास का भी नहीं है।

रामकथा का सार वेदना और संघर्ष है। इसलिए इतिहास के हर पीड़ादायी मोड़ पर संवेदनशील लेखक राम की ओर देखते हैं। बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद कैफी आज़मी ने 'दूसरा बनवास' नामक श्रेष्ठ नज़्म लिखी-

राम बनवास से जब लौट के घर को आए,